-:शोध सारांश:-

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यह युक्ति इतनी ज्यादा चलन में आ गई कि खेती और उससे जुड़े लोग सरकार की नीतियों में कहीं जगह नहीं पा सके। किसानों के संबंध में सरकार की घोषणाएँ या तो फाइलों में बंद हो जाती हैं या बिचौलियों तक ही सिमट कर रह जाती हैं। किसानों के संबंध में सरकार की योजनाएँ वैसे भी कारगर नहीं रही हैं फिर भी जो योजनाएँ बनाई गई उसका क्रियान्वयन सही ढंग से नहीं हो पाया परिणामस्वरूप खेती की नई-नई विधियों की जानकारी के अभाव में दिन-प्रतिदिन खाद एवं बिजली के मूल्यों में बढ़ोत्तरी होने के कारण किसान खेती से लागत का मूल्य भी नहीं निकाल पाता है। आज किसानों के समक्ष अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी एवं आत्महत्या जैसी अनेक समस्याएँ मुँह बाये खड़ी हैं। देश की लगभग आधी फीसदी से ज्यादा आबादी सरकार और समाज दोनों के यहाँ हाशिए पर है।

प्रस्तुत लघु शोध विषय 'प्रेमाश्रम' और 'सांझ सवेर' में किसान संघर्ष में तुलनात्मक अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य है। जिसके अंतर्गत मैंनें 'प्रेमाश्रम' और 'सांझ सवेर' उपन्यास में किसान कर्ज समस्या को, परिवार विखंडन की समस्या, किसान और जमींदार का संघर्ष एवं सत्ता के साथ संघर्ष दोनों उपन्यासों में समता और विषमता को दिखाने का प्रयास किया गया है।

'प्रेमाश्रम' और 'सांझ सवेर' में किसानों की समस्याओं को आधार बनाया गया है। इसमें एक तरफ सूदखोरों, मुनाफाखोरों की भी भूमिका है तो वहीं दूसरी तरफ जमीदारों और सामन्तों की, जिन्होंने धीरे-धीरे किसानों के द्वारा कर्ज़ नहीं चुका पाने पर उनकी जमीनों को छीन लिया करते है। इस तरह से उन्हें अपने जमीन से बेदखल कर दिया जाता है। भू-स्वामित्व बढ़ते चले गये और किसान मजदूर बनता चला गया। जो खेत कल उसका था वह आज कहीं न कहीं जमीदारों का हो गया और वह किसान से मजदूर बन गया। इस तरह से कर्ज़ ने किसानों को त्रासद अवस्था में पहुँचाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। लेकिन अगर हम आजादी के बाद देखे तो सरकार ने भी बैंक या अन्य माध्यमों के द्वारा इस तरह के

सूदखोरी या कर्ज़ समस्या को बढ़ावा दिया है। किसानों के खेती में कैसे विकास किया जाए, और कर्ज से मुक्त किया जाए, इस प्रकार की नीति बनाने के बजाय सरकार ने बैंकों के माध्यम से किसानों पर कर्ज़ का बोझ और बढ़ा दिया है । इस प्रकार की समस्याओं को प्रेमचंद और गुरुदयाल ने अपने-अपने उपन्यासों में बखूबी रूप से दिखाने का प्रयास किया है।

'प्रेमाश्रम' में जहां किसान जमींदार या साहूकार से कर्ज़ लेते है और कर्ज़ न चुका पाने पर उन्हीं के जमीनों से बेदखल कर दिया जाता है, वहीं पर 'सांझ सवेर' में बैकों के माध्यम से कर्ज़ की समस्याओं से जूझते हुए किसानों को दिखाया गया है। आज भी वहीं स्थिति है लेकिन जमींदारों का स्थान आज बैंकों ने ले लिया है, दोनों में कोई अंतर दिखाई नहीं देता है। आज भी किसान कर्ज़ की समस्या से जूझ रहे है और उस समय भी जूझ रहे है बस चेहरा बदल गया है।

अगर देखा जाय तो दोनों उपन्यास अपने-अपने समय के अन्तराल में भी कर्ज़ जैसी समस्या को दिखाने का प्रयास किया है। जो आज भी पूरे भारत में विद्यमान है चाहे वह पंजाब के क्षेत्र का हो या उत्तर प्रदेश (अवध) के क्षेत्र का हो देखा जाये तो आज यह समस्या नए-नए रूपों में व्याप्त है।

दोनों उपन्यासों में किसान समस्या के साथ-साथ उनके परिवार विखंडन की समस्या किसान की सबसे बड़ी समस्या होती है इसका मूल कारण किसान की गरीबी है जो अपनी परिवारिक स्थिति ठीक न होने के कारण शहरों में जाकर रोजगार मजदूरी करते है। परिवार विखंडन कुछ प्रमुख कारण हैं - परिवार के सदस्यों में कलह, उदारता का अभाव, व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना, स्वामित्व की लालसा, जमीन जायदाद को लेकर झगड़ा, परिवार के किसी सदस्य का अक्रर्मण्य होना। दोनों उपन्यासों में ये स्थिति साफ दिखाई देती है।

कुल मिलाकर देखें तो साहित्य में किसानों की जो स्थिति प्रेमचंद के समय नज़र आती है वही स्थिति कमोबेश गुरदयाल के समय में भी बनी हुई है। साहित्य समाज का दर्पण है तो, साहित्य में चित्रित किसान संदर्भों को फिर बहुत ही गहराई से समझने की अवश्यकता है। प्रेमचंद का जमींदार आज कंपनी का मालिक बन गया तो साहूकार बैंक। इसलिए किसानों के शोषण ने भी नया रूप लिया है। लेकिन स्थिति जैसी तब थी वैसी ही अब भी है। परिवर्तन सिर्फ शोषण के ढांचे व प्रकृति में है , मूल चरित्र में नहीं।

किसान मजदूर बनने की यह प्रक्रिया के साथ किसानों का संघर्ष ज्यादा मुखर होता है। वर्तमान समय में बन रही सरकारी नीतियों पर गौर करें तो बात स्पष्ट होती है कि कृषि और किसानों की सरकार की ओर से कितनी अनदेखी हो रही है। इसलिए वह संघर्ष बना हुआ है और आगे भी रहेगा।

-: Research Summary :-

India is an agricultural country. The device has come into play so much that agriculture and related policies of the government could not find a place anywhere. Government announcements of farmers in the files are closed or are reduced to intermediaries. The government's plans with respect to farmers even though it did not work out that the plans are not implemented correctly, could result in new methods of cultivation in the absence of knowledge of the day-to-day increase in the prices of fertilizers and electricity the cost value of the farmers could not do. Today farmers facing illiteracy, poverty, hunger and suicide left standing face many problems. Almost half per cent of the country's population, the government and society is marginalized here.

Submit short research topic Premasrm 'and' early evening 'main objective in comparative study of peasant struggle. Under which I have 'Premasrm' and 'Twilight sooner or later, "farmer in novel debt problem, the problem of family fragmentation, conflict and power struggle with the farmer and landowner parity in both novels and has attempted to show the contrast."Premasrm 'and' evening or later in the farmers' problems have been taken. Aside from the money-lenders, profiteers then there's the other side of landlords and nobles, who could not repay the loan gradually by farmers when their land is taken away. This way they are evicted from their land. Land ownership and peasant laborers went on to become

the long gone. His farm was the last day of landlords somewhere and he became a farmer laborers. The loan to farmers in such tragic condition is instrumental in reaching. But if we look after independence, the government of the banks or by other means, such as usury or loan is actually encouraged. Farmers how to farm development, and be free of debt, thus making the policy on farmers through banks instead of government debt burden has increased. Premchand such problems and Gurudyal brilliantly in their respective novels have attempted to show. "Premasrm 'landlord or lender where farmers are unable to pay the debt on the loan and take them out of the land is, on the' Twilight sooner or later" deal with the problems of the banks through loans to farmers were shown is. But today the situation of landlords, banks have taken place today, the two do not see any difference. Farmers are still grappling with the problem of debt and the time just changed the face has also been struggling. If speaking in a span of two novels in their time as the debt problem is attempted to show. Whether it still exists in India's Punjab region or state (period) of the area to be speaking, this problem today is rife in new Has attempted to show.

"Premasrm 'landlord or lender where farmers are unable to pay the debt on the loan and take them out of the land is, on the' Twilight sooner or later" deal with the problems of the banks through loans to farmers were shown is. But today the situation of landlords, banks have taken place today, the two do not see any

difference. Farmers are still grappling with the problem of debt and the time just changed the face has also been struggling.

If speaking in a span of two novels in their time as the debt problem is attempted to show. Whether it still exists in India's Punjab region or state (period) of the area to be speaking, this problem today is rife in new forms.

In both novels, as well as their family fragmentation problem peasant farmer's problem is the biggest problem of the farmer is the root cause unstable due to their family wage jobs in cities is going. Family fragmentation are some key reasons - family discord, lack of generosity, individual selfishness, greed of ownership, fight over real estate, a family member be Akrrmany. The situation has been evident in both novels.

Overall, the situation of farmers in literature Premchand's time appears more or less the same situation at the time of gurdayal remains. If literature is a mirror of society, depicted in literature references farmer is required to understand the very deep. Premchand's landlord lender Bank today became the owner of the company. Therefore, the exploitation of farmers has also revamped. But the situation is still the same as it was then. Just change the structure and nature of exploitation is not in original character.

Peasant farmers struggling with the process of labor is more vocal. If we look at government policies being made at the present time it is clear that agriculture and farmers' government is so overlooked. He continues to struggle, and will remain so.